अध्याय–द्वितीय
संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना

2.2 अनुसंधान संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अर्थ

2.3 अनुसंधान संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

2.4 शोध से संबंधित कार्य

अध्याय–द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1. प्रस्तावना :–

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अत्यंन्त महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंतर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य है कि, अनुसंधान की समस्या से संबंध उन सभी प्रकार का साहित्य– पुस्तकों/किताबों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से हैं। जिनके अध्ययन से अनुसंधान कर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं। उसके अभाव में अनुसंधान कार्य को उचित दिशा में बढ़ाया नहीं जा सकता। जब तक अनुसंधान कर्ता को ज्ञान न हो जाए कि, उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका हैं? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता हैं।

2.2. अनुसंधान संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का अर्थ :–

❖ **गुड़बार तथा स्केटस् (1959) के अनुसार : –**

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि, वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहें, उस प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करनेवाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक हैं।"

❖ चार्टर वी. गुड के अनुसार : –

"मुद्रित साहित्य के अपार भंडार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्त्रोत का द्वार खोल देती है, तथा समस्या के परिभाषीकरण अध्ययन की विधि का चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहाय करना है। वास्तव में रचनात्मक मौलिकता तथा चिंतन के विकास हेतु विस्तृत एवं गंभीर रचना आवश्यक है।"

2.3. अनुसंधान संबधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ :

1. वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।
2. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधान कर्ता द्वारा किया जा चुका है। वह पुनः किया जा सकता है।
3. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि, अनुसंधान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहा तक है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।
4. समस्या से संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।
6. किसी अनुसंधान कर्ता के द्वारा पूरा वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया जा चूका हो तो, हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा अतः संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे अनुसंधान कर्ता के प्रयास को सार्थकता प्रदान करता हैं।
7. इससे अनुसंधान कर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त होती है।

2.4 शोध से संबंधित कार्य :–

प्रस्तुत शोधकर्ता का विषय है, **"माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"** इससे संबंधित जो शोधकार्य हुये है उनका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है :–

1) A.P.R.C. AERA,

The Asion Jounral of psychology and education, 15 sep-2008.

- Editor in Chief-

Prof- Jiendra Mohan.- Vol, 41, No. 3-4, year-2008

"आदिवासी और गैर–आदिवासी स्नातक अंतर्गत विद्यार्थियों के चिन्ता स्तर का अध्ययन "

डॉ. प्रभाती देवी

निष्कर्ष :–

आदिवासी और गैर आदिवासी स्नातक अंतर्गत विद्यार्थियों के चिन्ता स्तर का अध्ययन करना। इस वर्तमान अध्ययन का केन्द्रबिन्दु है। उसी प्रकार लडके और लडकियों में चिन्ता स्तर के अंतर को खोजना यह भी इस अध्ययन करने का उद्देश्य है। न्यादर्श में 100 लडकियाँ और 100 लडकों का समावेश है। चिन्ता मापनी के न्यादर्श पर परीक्षण किया गया। आदिवासी और गैर–आदिवासी विद्यार्थियों के बीच चिन्ता स्तर में भिन्नता पायीं गई। उसी प्रकार लड़के और लडकियों के बीच भी चिन्ता स्तर में भिन्नता पाई गई।

2) A.P.R.C, AERA

Indian psychological Review

Vol.70, No. 3, year- 2008

"चिन्ता परीक्षण प्रेरणा के स्तर से संबंधित माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन"

3) Indian Journal of Applied psychology, April 2008, Vol. 45.

"उच्च माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों के चिन्ता परीक्षण एवं आत्म–सम्मान के बीच संबंध का अध्ययन"

4) कौल, लोकेश व भदवाल, सतीश चांद (1989)

उपलब्धि अभिप्रेरणा व परीक्षा चिन्ता : घटक परीक्षा का प्रभाव; भारतीय शैक्षिक संदर्भ ।

5) सक्सेना, वंदना (1988) –

"माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की स्वः उपलब्धि, अभिप्रेरणा पर चिंता के प्रभाव का अध्ययन"

6) दत्त, सुनील (1989) Ph.D., Edu. Punjab university (JNJ-0289)

"माध्यमिक स्कूल के विद्यार्थियों की बुद्धीमत्ता, चिन्ता स्तर, ज्ञानात्मक से संबंधित विज्ञान में उपागम विधि का समस्या निवारण क्षमता पर पडने वाला प्रभाव"

7) Dagaur, B.S. 1988 Relationship between neuroticism, Anxiety and creative thinking in the context of extraversion, psychoticism and sex. Indian Educational Review Vol 23, (2)

"विद्यार्थियों के मानसिक विकार सृजनात्मक सोच और चिन्ता के बीच परस्पर संबंधों के अध्ययन का प्रयास"

8) Kaur, Deepika 1991 A study of the effects of test Anxiety, belief in control of reinforcement, and intelligence on intellectual Achivement of two school population Ph.D. Psy. Pubjab University .

"चिंता प्रलोभन का बचाव बुद्धीमत्ता और उपलब्धि में दो स्कूल की जनसंख्या की समस्या के प्रभाव का अध्ययन"

9) Verma, Jagdish.1992. A study of learning style, achievment-motivation, anxiety, and other ecological correlates of high school student of Agra region. Ph.D. Edu. Dayalbagh Educational Institute.

"आगरा क्षेत्र के विद्यालय के विद्यार्थियों की चिन्ता उपलब्धि प्रेरणा से वर्तमान में सिखने की कला से संबंधित अध्ययन जिससे की विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारणों का सहसंबंध निकाला गया है"

10) Joshi, Manju, 1988.

Ph.D. Edu. Himachal Pradesh Univ. (L.K.0236)

"शाखागत विधि एवं एकल नियम कार्यक्रम निर्देश में विज्ञान विषय में हाईस्कूल के विद्यार्थियों की बुद्धीमत्ता पर चिन्ता के परीक्षण प्रभाव का अध्ययन"

11) Mohan, Anand, 1988, Ph.D.Psy., Agra Univ. (SS.0799)

"आत्म–सम्मान, सुरक्षित विचार की भावना, तनावग्रस्त और चिंन्ता का परीक्षण का शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध। "

12) C. Mohanty (1965), ने प्रारंभिक शालाओ के विद्यार्थियों पर चरण–गुण चिन्ता का कक्षा अधिगम एवं बुध्दी में सहसंबंध का अध्ययन करना यह था।

निष्कर्ष :–

इस अध्ययन में यह पाया गया कि, शैक्षिक उपलब्धि एवं चरण चिन्ता में नकारात्मक सहसंबंध हैं।